वार्तालाप-564, ताडेपल्लिगुडेम (आंध्र प्रदेश), दिनांक 08.05.08
Disc.CD No.564, Dt. 8.5.08, Tadepalligudem (Andhra Pradesh)

समयः 02.10-03.58

जिज्ञासुः बाबा, क्लास में वी.सी.डी चलते समय कोई जिज्ञासु आते हैं...

बाबाः नया जिज्ञासु?

जिज्ञासुः हाँ। तो (दृष्टी में बाबा का) चित्र देख सकते हैं क्या? माना अचानक कोई आता ह तो।

बाबाः क्लास में कोई आते हैं तो उन्हें दूसरे कमरे में ले जाओ। पहले समझाओ जाके उन्हें। वो क्या समझेंगे? वो तो समझेंगे इनका कोई गुरु ह।

जिज्ञासुः बेसिक कोर्स तो मिलता ही ह।

बाबाः अब बेसिक कोर्स हो, चाहे एडवांस कोर्स हो, सच्चाई को ही कोर्स कहा जाता ह। सच्चाई बात सुनानी ह। बेसिक कोर्स कोई अलग नहीं ह। मुरली में जो कुछ बोला ह वो ही एडवांस कोर्स ह और मुरली में जो कुछ बोला ह वो ही बेसिक कोर्स ह। मुरली से बेसिक कोर्स और एडवांस कोर्स हटकर के हैं क्या? हैं? एक ही बात तो ह। बेसिक को अलग क्यों कर दिया? सच्ची बात सुनाना, सच्ची बात बताना, देवताओं के बारें में, सृष्टि के बारे में, आत्मा के बारे में। पहले-पहले बाप के बारे में परिचय देना। तो कोई नया आता ह तो वो बाबा की भाषा, बाबा के ज्ञान की बातों को थोड़े ही समझ सकेगा। इसलिए उसको अलग उठाके दूसरे कमरे में ले जाना चाहिए।

Time: 02.10-03.58
Student: Baba, if some student comes when the VCD is played in class…
Baba: A new student?
Student: Yes. Can he see [Baba's] picture (in the *drishti*)? If someone comes suddenly.
Baba: If someone comes during the class, take them to another room. First go and explain to them. What will they think? They will think he (i.e. Baba) is their guru.
Student: They do get the basic course.
Baba: Well, whether it is the basic course or the advance course, truth itself is called course. You have to narrate the truth. Basic course is not something different. Whatever has been said in the murli is itself the advance course. And whatever has been said in the murlis is itself the basic course. Is the basic course and the advance course any different from the murlis? Are they? They are one and the same thing. Why did you separate the basic (course)? [It is] To narrate the truth, to speak the truth about the deities, about the world (cycle), about the soul; to give the introduction of the Father first of all. So, if a new student comes, he will not be able to understand Baba's language, Baba's topics of knowledge. This is why you should take him to a separate room.

समयः 04.02-06.00

जिज्ञासु ने कुछ पूछा।

बाबाः अच्छा, अकेले याद में बठना ज्यादा अच्छा लगता ह या संगठित क्लास में सबके साथ बठने में ज्यादा अच्छा लगता ह या बाबा जब याद में बठाते हैं तब बठना ज्यादा अच्छा लगता

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

है तीनों तरह जब याद करते है या चलते फिरते, काम करते याद करते हैं तो ज्यादा अच्छा लगता है किसी स्थिति में याद में रहना ज्यादा अच्छा लगता है

जिज्ञासुः चलते फिरते काम करते हुए।

बाबाः चलते फिरते काम करते याद ज्यादा अच्छी लगती है बाबा बैठाते हैं तो उस समय ज्यादा अच्छी याद नहीं लगती? और जब सब लोग इकट्ठे होकर क्लास में बैठते हैं, याद करते हैं तब भी याद अच्छी नहीं लगती? क्योंकि आपस में जब मिलते हैं तब तो वायब्रेशन दुनिया वालों के मुकाबले ज्यादा अच्छे मिलने चाहिए। इसलिए क्लास में भी ज्यादा नहीं आते हैं।

Time: 04.02-06.00
Student asked something.
Baba: OK, do you like to sit alone in remembrance, or do you like to sit (in remembrance) with everyone in a gathering class, or do you like to sit in remembrance when you are made to sit in remembrance by Baba? When you remember [Baba] in all the three ways; or do you like to remember [Baba] while walking, while working? In which stage do you like to stay in remembrance?
Student: While walking, while working.
Baba: You like to remember while walking, while working? You are not able to remember well when you are made to sit (in remembrance) by Baba? And you not like to remember when everyone sits in the class together in remembrance either? It is because when everyone meets together, you should get better vibrations when compared to the people of the world.

समयः 09.38-11.25

बाबाः प्रश्न आया है सतयुगी कृष्ण का जन्म २०३६ में होगा। तो कहते हैं १८ वर्ष के बाद गद्दी मिलती है

उत्तरः वहाँ गद्दी-वद्दी की बात ही नहीं है सतयुग में कोई गद्दी होने की बात है झाड़ के चित्र में रा ा-कृष्ण को या लक्ष्मी-नारायण को गद्दी दिखाई है सीढ़ी के चित्र में लक्ष्मी-नारायण को या रा ा-कृष्ण को गद्दी दिखाई है हैं? (जिज्ञासु – नहीं।) क्यों नहीं है क्योंकि वहां गद्दी की और छत्रछाया की बात ही नहीं है वहाँ तो सब १६ कला संपूर्ण यथा राजा तथा प्रजा होते हैं। वहाँ कोई किसी के ऊपर कंट्रोल करने की बात नहीं। कोई के ऊपर राजाई करने की भी बात नहीं है असली स्वतंत्रता तो वहाँ है जैसे-जैसे कलाएं कम होती जाती हैं तब कंट्रोलिंग की जरूरत पड़ती है इसलिए त्रेतायुग में राम-सीता को गद्दी पर बैठाया हुआ दिखाया गया है छत्रछाया दिखाई गई है और आगे द्वापर-कलियुग में भी गद्दी होती है क्योंकि कलाएं कम होती जाती है अनुशासनहीनता बढ़ती जाती है मनुष्यात्माएं कंट्रोल से बाहर होती जाती हैं। तो उनको कंट्रोल करने की दरकार पड़ती है

Time: 09.38-11.25
Baba: A question has been asked: the Golden Age Krishna will be born in 2036. So, it is said that he ascends the throne after 18 years.
Answer: There is no question of throne over there at all. Is there any question of throne in the Golden Age? In the picture of the Tree, have Radha and Krishna or Lakshmi and Narayana been shown to have a throne? In the picture of the Ladder, have Lakshmi and Narayan or Radha and

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Krishna been shown to have a throne? Do they have [a throne]? (Students: They don't.) Why don't they have [a throne]? It is because there is no question of throne and canopy there. There everyone is complete with 16 celestial degrees, the subjects are like the king. There is no question of controlling anyone over there at all. There is no question of ruling over someone either. True freedom exists there. As the celestial degrees decrease, there is a need to control. This is why Ram and Sita have been shown to be sitting on a throne in the Silver Age; a canopy (*chatrachaya*) has been shown [over them]. And further there is a throne in the Copper Age and the Iron Age also because the celestial degrees go on decreasing; goes on increasing, human souls continue to go out of control. So, there is a need to control them.

समयः 12.35-14.20

बाबाः रा□ा-कृष्ण के लिए बताया गया ह□ कि जब १८ साल के हो जावेंगे तब उनको गद्दी मिलेगी।

उत्तरः बाबा जितना भी लक्ष्य देते हैं वो लक्ष्य संगमयुग के लिए देते हैं, वर्तमान जन्म के लिए देते हैं कि शरीर छोड़ने के बाद अगले जन्म के लिए लक्ष्य देते हैं? (किसी ने कुछ कहा) हाँ, बाबा तो वर्तमान समय में पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। वर्तमान में ही उनको इसी जन्म में, भविष्य में प्रारब□ मिलनी ह॥ तो २०३६ उस समय तो विश्व की बादशाही संसार में डिक्लेयर होती ह॥ ५००-७०० करोड़ मनुष्यात्माओं की जो आखरी आत्माएं हैं जो बिल्कुल नास्तिक हैं वो भी अंत समय में कहेंगी कि ये विश्वपिता आया हुआ ह॥ उस समय कहा जाएगा विश्व का मालिक। विश्व की कोई २-४ आत्माओं ने भी नहीं माना तो उसको फिर विश्व का मालिक कहेंगे? विश्व में सभी आ जाते हैं या कोई रह जाएगा? विश्व में सभी आ जाते हैं। इसलिए २०१८ में जन्म माना प्रत्यक्षता रूपी जन्म और २०३६ में विश्व का राजभाग साबित हो जाता ह॥

Time: 12.35-14.20

Baba: It has been said about Radha and Krishna that when they grow 18 years old, they will get the throne.

Answer: Does Baba give us all the aims for the Confluence Age, for the present birth or for the next birth after you leave the body? (Someone said something.) Yes, Baba is teaching the knowledge at the present time, [hence] they will get the fruit (of their actions) at the present time, in this very birth, in the future. So, the emperorship of the world is declared at that time, in 2036. The last souls among the 500-700 crore (5-7 billion) human souls, who are completely atheists; even they will say in the end period that the father of the world has come. At that time he will be called the master of the world. Even if 2-4 souls of the world do not accept him, will he be called the master of the world? Is everyone included in the world or will anyone be left out? Everyone is included in the world. This is why birth, i.e. the revelation like birth is proved in 2018 and the kingship of the world in 2036.

समयः 14.35-18.50

जिज्ञासुः राम ही रावण बनता ह□ कृष्ण ही कंस बनता ह॥ ये समय हो गया या आगे की बात ह□

बाबाः जो आत्मा सबसे पहले सतोप्र□ान बनती ह□ सतयुग के आदि में सतोप्र□ान ह□ सबसे जास्ती, तो दुनिया में सबसे जास्ती तमोप्र□ान कब बनेगी? बीच में बनेगी या अंत में बनेगी? एकदम अंत में। जब तमोप्र□ानता की हद को दूसरी आत्माएं पार नहीं कर पाती हैं क्योंकि

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

क्रिश्चियंस के लिए बोला ह न ज्यादा तमोप्र ान बनते, न ज्यादा सतोप्र ान बनते। तो भल इस सृष्टि का अंत आ जाए तो भी क्रिश्चियन आत्माएं उतनी तमोप्र ान नहीं बनेंगी जितनी देवी देवता सनातन र्म की आत्माएं तमोप्र ान बनेंगी। अंतर क्या होता ह कि देवी-देवता सनातन र्म की आत्माएं ीरे-ीरे तमोप्र ान बनती हैं। और-और र्मों की आत्माएं थोड़े समय में सतोप्र ान और थोड़े ही समय में तमोप्र ान बन जाती हैं।

Time: 14.35-18.50
Student: Ram himself becomes Ravan, Krishna himself becomes Kansa. Has this already happened or will it happen in the future?
Baba: The soul which becomes *satopradhan*[1] first of all; it is the most *satopradhan* in the beginning of the Golden Age. So, when will it become the most *tamopradhan* in the world? Will it become that in the middle or in the end? [It will become that] in the very end. When other souls are unable to cross the limit of *tamopradhanta*[2]; because it has been said for the Christians that they neither become more *satopradhan* nor do they become more *tamopradhan*. So, even if this world comes to an end, the Christian souls will not become as *tamopradhan* as the souls of the Ancient Deity religion. The difference is that the souls of the Ancient Deity religion become *tamopradhan* slowly. The souls of other religions become *satopradhan* as well as *tamopradhan* in a short period.

तमोप्र ान बनने में भी वो आत्माएं आगे देवी देवता सनातन र्म की। आगे का मतलब ये नहीं कि पहले तमोप्र ान बन जाती हैं। नहीं। जब सृष्टि का अंत होता ह तो जो सबसे पुरानी सतोप्र ान आत्माएं थी वो ही सबसे जास्ती तमोप्र ान बनती हैं। इसलिए बोला ह कि कृष्ण की आत्मा ही कंस बनती ह और राम ही रावण बनता ह अति तामसी युग में। क्योंकि अति का विनाश भी किसको करना ह आत्मा स्वयं के लिए स्थापना भी करती ह। आत्मा स्वयं के लिए विनाश भी करती ह। तो आत्माओं के बीच में सबसे जास्ती स्थापना करने वाले कौन? अपने लिए सद्गुणों की स्थापना करने वालों में सबसे आगे नंबर किसका होगा? राम और कृष्ण का। इसलिए जब सृष्टि तमोप्र ान हो जाए तो तमोप्र ान सृष्टि में सबसे जास्ती तमोप्र ान स्टेज में रहने वाला राम-कृष्ण की आत्माएं ही साबित होंगी। इसलिए कहा जाता ह लोहे से लोहा टकराता ह विष से विष मारा जाता ह। लोहा माने कलियुग। कलियुग लोहे समान ह। तो कलियुग में शूद्र वर्ण में, शूद्रता में सबसे आगे आत्माएं कौनसी जावेंगी? राम और कृष्ण की आत्माएं शूद्रपने में सबसे आगे। वह भी कहा गया ह – पहला ब्राह्मण सो पहला देवता। जो पहले नंबर का देवता सो पहले नंबर का क्षत्रीय। जो पहले नंबर का क्षत्रीय सो पहले नंबर का वैश्य। वो ही पहले नंबर का शूद्र बनता ह।

Those souls of the Ancient Deity religion are ahead in becoming *tamopradhan* as well. 'Ahead' does not mean that they become *tamopradhan* first. No. When the world ends, the most ancient satopradhan souls themselves become the most impure souls. This is why it has been said that the soul of Krishna himself becomes Kansa and Ram himself becomes Ravan in the most degraded age… because who has to destroy (i.e. end) the extremity as well? A soul establishes

[1] Consisting in the quality of goodness and purity
[2] Stage of darkness or ignorance

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

for itself as well as destroys for itself. So, among the souls, who do the maximum establishment? Whose number will be ahead of everyone in establishing the divine virtues for himself? Ram and Krishna's [number will be ahead]. This is why when the world becomes *tamopradhan*, then it is the souls of Ram and Krishna themselves who will be proved to be the ones with the most *tamopradhan* stage in the *tamopradhan* world. This is why it is said that iron clashes with iron, poison kills poison. Iron means the Iron Age. The Iron Age is like iron. So, which souls will go ahead of everyone in *shudrata* (having the characteristics of a *Shudra*[3]) in the *Shudra* class (*shudra varn*)? The souls of Ram and Krishna go ahead of everyone in having the *Shudra* characteristics. In a way, it has been said, the one who is the first Brahmin himself becomes the first deity. The one who is the No.1 deity is the No.1 *Kshatriya*[4]. The one who is the No.1 *Kshatriya* is the No.1 *Vaishya*[5]. He himself becomes the No.1 *Shudra*.

समयः 21.30-24.52

बाबाः प्रश्न ये आया है कि जो आत्माएं प्रवेश कर रही हैं सूक्ष्म शरीर धारण करके। उनको अपना शरीर तो होता नहीं साकार में। इसलिए उनको तो पाप-पुण्य लगता नहीं है। वो तो जैसे इन्स्पिरेटिंग पार्टी हो गई। तो आखरीन जब धर्मराज की सज़ाएं खायेंगे तो सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं को सजा मिलेगी या नहीं मिलेगी?

उत्तरः जो सूक्ष्म शरीर धारण करने वाली हैं और भी प्रवेश करके पाप करा देती हैं या अच्छे संकल्प चला करके पुण्य भी कराती हैं, सर्विस भी कराए देती हैं; जैसे मम्मा-बाबा की आत्माएं अभी प्रवेश करती हैं तो प्रवेश करके सर्विस भी कराती हैं। तो जो आत्माएं सूक्ष्म शरीरधारी हैं और नंबरवार है वो धर्मराज की सज़ाएं खाएंगी तो कैसे खाएंगी?

Time: 21.30-24.52

Baba: A question has been asked that the souls which are entering [others] by taking on a subtle body, do not have their own body, in a corporeal form. This is why they do not accumulate sins or merits (*paap-punya*). They are like an inspiriting party. So, ultimately when they suffer the punishments of *Dharmaraj*, will the subtle bodied souls get punishments or not? The [souls] who take on a subtle body who make others commit sin after entering them or they also make them do noble deeds by creating good thoughts , they also make them do service; for example, the souls of Mamma and Baba enter now and after entering they also make others do service …. So, the souls who have a subtle body and are number wise (according to their ranks); how will they suffer the punishments of Dharmaraj?

उसके लिए बताया है स्थूल शरीर धारण करके सज़ाएं खाएंगी। स्थूल शरीर धारण करेंगी; किसमें? उन आत्माओं में स्थूल शरीर धारण करेंगी जो अपने शरीर से अलग रहना सीख जाएंगी। अभी तो हम अलग नहीं हो पा रहे हैं। लेकिन पुरुषार्थ करते-2 जो सन्मुख बैठने वाले बच्चे हैं, वो शरीर से अलग होना सीख जाएंगे या प्रवेश करने वाली आत्माएं पहले शरीर से अलग होना सीख जाएंगी?

[3] untouchable; a member of the fourth and the lowest division of the Indo-Aryan society
[4] a member of the warrior class
[5] a member of the merchant class

For that it has been said that they will take on physical body and suffer punishments; they will take on physical body; in whom? They will take on physical body of those souls who will learn to remain detached from their bodies. Now we are unable to detach ourselves (from our body at our will). But while making *purusharth*, will the children who sit face to face (with Baba) learn to be detached from the body or will the souls that enter (in them) learn to be detached from the body first?

दो तरह की आत्माएं हैं। एक तो प्रवेश होने वाली। उनको सूक्ष्म शरीर ह बीजरूप स्टेज उनकी उतनी नहीं बन पा रही ह दूसरी एडवांस पार्टी की वो आत्माएं हैं जो प्लनिंग पार्टी की हैं और वो प्लानिंग पार्टी वाली आत्माएं बीजरूप स्टेज वाली हैं जिन्हें बाबा कहते हैं – तुम बच्चे। तो जिन्हें तुम बच्चे कहते हैं वो पुरुषार्थ में तीखे हैं या उनमें प्रवेश करने वाली आत्माएं ज्यादा पुरुषार्थ में तीखी हैं? (किसी ने कहा- सन्मुख बठते हैं वो ही ...) वो ज्यादा तीखे हैं क्योंकि जो प्रवेश करने वाले हैं वो तो आगे जाकरके जन्म लेंगे। अगले जन्म में। उनको तो यहाँ का पुरुषार्थी जा जीवन नहीं बिताना ह इसीलिए जो सन्मुख बठने वाली आत्माएं हैं, जिनमें प्रवेश होता ह वो आत्माएं जब संपन्न बन जावेंगी तो संपन्न बनी हुई आत्मा तो अपने शरीर से अलग उड़ करके देखेंगी और जो प्रवेश करने वाली आत्माएं हैं वो उसमें प्रवेश करके अपना पाप कर्म मराज से भोगेंगी। एक सेकण्ड में अनेक जन्मों की सज़ाओं का अनुभव करेंगी।

There are two kinds of souls. One kind [among them] is the souls which enter. They have subtle bodies. They are unable to attain the seed form stage to that extent. The other kind [among them] is those souls of the advance party who belong to the planning party and those souls of the planning party are the ones who attain the seed-form stage, whom Baba addresses as, "You children". So, the ones whom He calls 'you children' – are they fast in making *purusharth* or are the souls which enter them faster in making *purusharth* ? (Someone said: those who are sitting face to face themselves…) They are sharper because those who enter will be born in future, in the next birth. They do not have to spend a *purusharth* life (life of making spiritual effort) like here. This is why the souls who sit face to face, in whom they enter, when they become perfect, then the perfect souls will fly out of their bodies (at their will) and watch [everything]. And the souls that enter will enter in them and suffer the punishments given by Dharmaraj for their sinful actions. They will experience the punishments of many births in a second.

समयः 25.00-26.02

जिज्ञासुः बाबा, संगमयुग २०३६ तक होता हैं ना बाबा।

बाबाः संगमयुग ज्यादा से ज्यादा १०० साल का ।

जिज्ञासुः १०० साल होता ह

बाबाः हाँ।

जिज्ञासुः तो १.१.१ कबसे शुरु होता ह

बाबाः २०३६ के बाद तो नई दुनिया शुरू हो जाएगी। वहां तो सुख की दुनिया होगी या दुख की दुनिया होगी? (किसीने कहा- सुख की दुनिया।) जहाँ सुख की दुनिया होती ह वहाँ दिन नहीं गिने जाते। वहाँ संवत १.१.१ या संवत २.१.१ या ४.१.१ ऐसे नहीं गिनेंगे। जहां दुख होता ह वहाँ दिन

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

गिने जाते हैं। जहाँ दुख होता ही नहीं वहाँ तवारीख होती ही नहीं ह इसलिए ये तो उस समय की बात ह जब संगमयुगी लक्ष्मी-नारायण कहो, संगमयुगी कृष्ण कहो, उनकी प्रत्यक्षता हो जाए।

जिज्ञासुः २०१८.

बाबाः हाँ, जी।

Time: 25.00-26.02
Student: Baba, the Confluence Age is till 2036, isn't it?
Baba: The Confluence Age is of 100 years at the most.
Student: It is of 100 years.
Baba: Yes.
Student: So, from when does [the year] 1.1.1 begin?
Baba: The new world will start after 2036. Will there be a world of happiness or a world of sorrow there? (Someone said: the world of happiness.) In the world of happiness, days are not counted. The Era will not be counted as the year 1.1.1 or as 2.1.1 or 4.1.1. Days are counted where there is sorrow. Where there is no sorrow at all, there is no date at all. This is why it is about that time when the Confluence Age Lakshmi-Narayan or call him the Confluence Age Krishna is revealed.

समयः 26.20-28.37

जिज्ञासुः बाबा, मन जीते जगत जीत कहते हैं।

बाबाः मन जीते जगतजीत।

जिज्ञासुः इन्द्रिय जीते जगतजीत।

बाबाः इन्द्रिय जीते जगतजीत।

जिज्ञासुः काम जीते जगतजीत।

बाबाः काम जीते जगतजीत।

जिज्ञासुः इन सब में अंतर क्या हैं?

बाबाः काम माने कामना और कामना का कनेक्शन ह मन से। इसलिए एक ही बात हो गई। और इन्द्रिय जो हैं, वो दसों इन्द्रियाँ, दसों इन्द्रियाँ जो हैं वो मन से कनेक्टेड ह इन्द्रियाँ अपना काम करती रहें और मन दूसरी जगह लगा हुआ हो तो इन्द्रियों को न सुख भासेगा, न दुख भासेगा। माना इन्द्रिय के ऊपर जीत हो गई। अगर मन कंट्रोल कर लिया अलग से तो। इसलिए तीनों ही एक ही बातें हैं अलग-अलग नहीं हैं।

Time: 26.20-28.37
Student: It is said, *man jeete jagat jeet* (The one who conquers the mind conquers the world).
Baba: The one who conquers the mind conquers the world.
Student: *Indriya jeete jatag jeet* (The one who conquers the (bodily) organs conquers the world).
Baba: The one who conquers the organs conquers the world.
Student: *Kaam jeete jagat jeet* (The one who conquers lust (*kaam*) conquers the world).
Baba: The one who conquers lust conquers the world.
Student: What is the difference between all these?
Baba: *Kaam* means *kaamnaa* (desire). And the connection of desire is with the mind. This is why it is one and the same thing. And the organs; all the ten organs are connected with the mind.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

If the organs go on performing their tasks and if the mind is busy somewhere else, then the organs will neither experience happiness nor sorrow. It means that the organs have been conquered, if you have controlled the mind separately. This is why all the three are one and the same thing and not different things.

चाहे मन जीते जगतजीत कह लो, चाहे इन्द्रिय जीते जगत जीत कह लो। क्योंकि इन्द्रियों में सबसे तीव्र इन्द्रिय ह कामेन्द्रिय। जो कंट्रोल से बाहर हो जाती ह मन के कंट्रोल में नहीं रहती। तो कहने-कहने का अंतर ह बात एक ही ह मन को ११वीं इन्द्रिय कहा जाता ह परन्तु उसका स्थूल रूप नहीं ह वो अति सूक्ष्म ह ज्ञानेन्द्रियों से भी जास्ती सूक्ष्म ह शास्त्रों में तो मन को ही आत्मा कहा ह मनरेव आत्मा। बाबा भी यही बताते हैं। मन-बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता ह आत्मा को एकाग्र कर लिया माना मन को एकाग्र कर लिया। मन एकाग्र हो गया माने इन्द्रियाँ अपने आप ही एकाग्र हो जाएंगी।

You may call it, *man jeete jagat jeet* or *indriya jeete jagat jeet*; because among the organs, the most impetuous organ is the organ of lust (*kaamendriya*) which goes out of control. It does not remain under the control of the mind. So, it is just a difference of words, [otherwise] they are one and the same thing. The mind is called the eleventh organ. But it does not have a physical form. It is very subtle. It is subtler than the sense organs. In the scriptures, mind itself has been called the soul: *'Manrev aatma'*. Baba also says the same thing, the mind and intellect itself is called the soul. If you have made the soul stable, it means that you have made the mind stable. If the mind has become focused, then it means that the organs will become focused automatically.

ह्यदराबाद (आंध्र प्रदेश), दिनांक 14.04.08
Hyderabad (Andhra Pradesh) Dt. 14.4.08

समयः 00.05-00.40
जिज्ञासुः बाबा, सतयुग में बेहद की पार्लियामेंट।
बाबाः बेहद की पार्लियामेंट। वहाँ पार्लियामेंट की दरकार ही नहीं। पार्लियामेंट तो प्रजा के ऊपर प्रजातंत्र राज्य में बनाई जाती ह वहाँ तो एक ही राजा का राज्य होता ह पार्लियामेंट की क्या दरकार? जो एम.पी. वगैरह चुनाव करना पड़े?

Time: 00.05-00.40
Student: Baba, the unlimited Parliament in the Golden Age.
Baba: The unlimited Parliament? There is no need for a Parliament there at all. Parliament is established in a democracy (*prajatantra raajya*) where subjects rule over subjects. There is the rule of only one king there (in the Golden Age). What is the need for a Parliament which requires electing MPs(Members of Parliament) etc.?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 00.45-01.35

जिज्ञासुः बाबा, चौपड़ क्या ह

बाबाः चौपड़। वो चौपड़ ऐसा चौकोर पत्ती बिछायी जाती ह उसमें गोटी डाली जाती ह नम्बर बढ़ते जाते हैं, गोटी भी आगे बढ़ती जाती ह उस आ ार पर हार और जीत होती ह पासा जिसको कहते हैं पासा फेंकना। पहले पुराने ज़माने में चौपड़ का ही खेल बहुत होता था राजाओं, महाराजाओं में। बाद में फिर ये जबसे मुसलमान आये तो शतरंज निकली, फिर क्रिश्चियंस आए तो ढ़ेर के ढ़ेर खेल निकल पड़े।

Time: 00.45-01.35
Student: Baba, what is meant by *Chaupar*?
Baba: *Chaupar*. In *Chaupar*, a cross-shaped sheet (*chaukor patti*) is placed like this. Dices are thrown in it (the game). As the numbers increase, the piece (*goti)* moves ahead. Defeat and victory is decided on that basis. It is called 'throwing the dice' (*pasa phekna*). In the older days the kings and emperors used to play only the game of *chaupar* a lot. Later on, ever since the Muslims came, *shatranj* (chess) was invented; later, when the Christians arrived, numerous games emerged.

समयः 01.40-02.50

जिज्ञासुः बाबा, मुरली में एक प्वाइंट ह – मैं जब भी आता हूँ त्रिमूर्ति के साथ आता हूँ। तो परम ाम से नीचे आते हैं या जो त्रिमूर्ति बनने वाले हैं वो परम ाम की स्थिति में स्थित होते हैं?
बाबाः जब भी आता हूँ, जहां कहीं से भी आता हूँ। जब भी आता हूँ तो त्रिमूर्ति साथ होनी चाहिए। माने तीनों ही आत्माएं साथ होती हैं। राम वाली आत्मा भी साथ होती ह कृष्ण वाली आत्मा भी साथ होती ह और दोनों के बीच में जो न्यूट्रल पार्ट बजाने वाली आत्मा ह वो भी साथ होती ह क्योंकि मैं तो बिन्दी हूँ। बिन्दी के आने न आने का कोई मतलब ही नहीं साबित होता। तो जब भी प्रत्यक्ष होऊंगा तो तीन मूर्तियों के द्वारा ही प्रत्यक्ष होना ह इसलिए त्रिमूर्ति शिव कहा जाता ह

Time: 01.40-02.50
Student: Baba, there is a point in the *murli*: "Whenever I come, I come with the Trimurty (the three personalities)". So, do they descend from the Supreme Abode or do the three personalities become constant in the stage of the Supreme Abode?
Baba: Whenever I come, from wherever I come; whenever I come, the three personalities should be with Me. It means that all the three souls are with Me. The soul of Ram as well as the soul of Krishna is with Me. And in between both of them the soul which plays the neutral part is also present with Me; because I am only a point (*bindi*). There is no meaning in a point coming or not coming. So, whenever I am revealed, I have to be revealed through the three personalities themselves. This is why it is said, *'Trimurty Shiv'*.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 02.52-04.59

जिज्ञासुः बाबा, एक अव्यक्त वाणी में (बोला ह कि) मम्मा - बाबा ने नेपाल में जन्म लिया।

बाबाः मम्मा - बाबा नेपाल में जन्म लिया? हाँ।

जिज्ञासु ने कुछ कहा।

बाबाः हाँ, नेपाल में जन्म लिया तो कोई गलत बात थोड़े ही हो गई। बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं। तो नेपाल भी एक तो हद का ह जो पहाड़ों पर दिखाया गया ह वो तो स्थूल पहाड़ हो गए। एक बेहद की ऊँचाई पे ह बेहद का नेपाल, जो एडवांस पार्टी में ह ऊँची स्टेज वाले हैं। ज्ञान की मनन-चिंतन-मंथन की ऊँची स्टेज में रहते हैं। वहाँ मम्मा-बाबा ने जाके जन्म लिया। इसलिए मुरली में बोला ह – गाँ ी मरा, राजकोट में जाकर कोई बड़े साहूकार कांग्रेसी के घर में जन्म लिया। तो जरूर एड़वांस पार्टी में कोई ज्ञान का साहूकार होगा। अर्थात राम वाली आत्मा। उसकी बुद्धि रूपी पेट में कृष्ण वाली आत्मा प्रवेश कर जाती ह जन्म लिया। बाद में प्रत्यक्ष हो जाती ह

Time: 02.52-04.59

Student: Baba, (it has been said) in an *Avyakta vani* that the birth of Mamma-Baba has taken place in Nepal.

Baba: Mamma-Baba have been born in Nepal? Yes.

Student said something.

Baba: Yes, if their birth has taken place in Nepal, it is not wrong. The unlimited Father speaks about the unlimited topics to the unlimited children. So, one is the limited Nepal which has been shown on the mountains. Those are physical mountains. One [Nepal] is at an unlimited height, the unlimited Nepal which is in the advance party. They are in a high stage. They remain in a high stage of knowledge, of thinking and churning. There the birth of Mamma and Baba took place. This is why it has been said in a murli, "When Gandhi died, his birth took place in the house of a very prosperous Congressman at Rajkot". So, certainly there must be a prosperous person from the point of view of knowledge in the advance party, i.e. the soul of Ram. The soul of Krishna enters his womb like intellect, i.e. his birth too place. It is revealed later on.

जिज्ञासुः बाबा कांग्रेसी के पास जन्म लिया – ऐसे क्यों बोला?

बाबाः कांग्रेस गवर्मेन्ट बड़ी गवर्मेन्ट ह ना। शुरुआत से लेकर के अब तक भी उसका दबदबा चला आया ह

जिज्ञासुः कांग्रेस माना कांव-कांव करने वाले।

बाबाः एक कांग्रेस पार्टी ह और एक कांग्रेस कहते हैं सरकार को।

Student: Baba, why was it said that he was born at the home of a Congressman?

Baba: Congress government is a big government, isn't it? From the beginning till now, it has been dominant.

Student: Congress means those who caw.

Baba: One is a Congress Party and one Congress refers to the Government.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 05.01-07.35

जिज्ञासुः बाबा, भाई का प्रश्न ह□– उनके मां-बाप ज्ञान में नहीं चलते हैं। अगर उनके माँ-बाप में से कोई भी शरीर छोड़ा तो लौकिक □र्म का जो रिवाज ह□ क्रिया कर्म करना ह□(या) नहीं करना ह□

बाबाः जिनके माँ-बाप ज्ञान में नहीं चलते हैं और माँ-बाप ने अगर शरीर छोड़ दिया लेकिन बच्चा तो ज्ञान में चलता ह□ माँ-बाप ने शरीर छोड़ दिया। वो तो फट से जाकरके आत्मा दूसरी जगह जन्म ले गई। अब बच्चे हैं अगर ज्ञान में पक्के हैं तो कुछ भी नहीं करने की दरकार ह□ उनको। बाबा की याद में बठेंगे और ब्राह्मण परिवार को याद में बठायेंगे। और क्या करना ह□ और तो सब अं□ श्रद्धा अं□ विश्वास की बातें ह□ भक्तिमार्ग में जो कर्मकांड किये जाते हैं। उनसे फायदा तो कुछ भी नहीं। अब रही बात लोकलाज में लोगों का मुकाबला करने की तो जितना ज्ञान बल वाला होगा, योगबल वाला होगा तो मुकाबला करेगा। कम ताकत होगी तो मुकाबला नहीं करेगा।

Time: 05.01-07.35
Student: Baba, a brother has asked a question: his parents do not follow this knowledge. If any one of his parents leave their body, the traditions and rituals that are followed in the worldly religion; should he perform the funeral rites or not?
Baba: Those whose parents do not follow the knowledge and if the parents leave their body, but the child follows knowledge; the parents left their body [and] the soul will be born somewhere else immediately. Now if the children are firm in knowledge there is no need for them to do anything (i.e. rituals). They will sit in Baba's remembrance and make the Brahmin family sit in remembrance. What else has to be done? Everything else [i.e.] the funeral rites performed on the path of bhakti are a subject of blind reverence and blind faith. They do not bring about any benefit. Well, as regards confronting the people with regard to public honour, a person will confront them to the extent he has the power of knowledge, the power of *yog* (remembrance). If he has less power, he will not confront.

जिज्ञासुः कहते हैं ना लौकिक और अलौकिक का भी तोड़ निभाना ह□

बाबाः हाँ, तोड़ निभाने का मतलब क्या ह□

जिज्ञासुः दुनिया को दिखाने के लिए ।

बाबाः दुनिया को दिखावा किस बात का करना ह□ कि हम भगत हैं?

जिज्ञासुः बुद्धियोग से बाप के नज़दीक रहते हैं।

बाबाः तो वो दिखावा करो। जिससे बुद्धियोग का दिखावा हो जाए कि हां योगी हैं, ज्ञानी हैं। जो दुनिया भस्म होने वाली ह□ उस भस्म होने वाली दुनिया के नीति रस्म रिवाज़ों के ऊपर चलना ये तो बड़े □ोखे की बात ह□ जो दुनिया सामने आने वाली ह□ और हमने समझ लिया ह□ कि ये दुनिया सामने आने वाली ह□ तो हम भस्म होने वाली दुनिया के पीछे क्यों जाएं?

जिज्ञासुः जब मम्मा ने शरीर छोड़ा तो उनका शरीर भी तो जलाया गया ना ।

बाबाः ठीक ह□

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः कर्मकांड कुछ नहीं किया क्या?
बाबाः कर्मकांड कुछ नहीं हुआ।
जिज्ञासुः कुछ नहीं हुआ?
बाबाः नहीं।

Student: It is said that we have to maintain the *lokik* as well as the *alokik* relationships.
Baba: Yes, what is meant by 'maintaining the relationships'?
Student: To show-off to the world.
Baba: What do we have to show-off to the world? [Do we have to show off:] "We are devotees (*bhakt*)"?
Student: We remain close to the Father through our intellect.
Baba: So, show-off that, so that you could show-off your intellect, that yes, you are a *yogi*, a knowledgeable person. To follow the rituals and traditions of the world that is going to be burnt to ashes is a subject of great deceit. The world which is going to arrive… and we have understood that this world is going to arrive, then why should we go after the world that is going to be burnt to ashes?
Student: When Mamma left her body, even her body was burnt, wasn't it?
Baba: It is correct.
Student: Was no ritual followed?
Baba: No ritual was followed.
Student: No ritual was followed?
Baba: No.

समयः 08.18-09.25

जिज्ञासुः बाबा, बोला शेर आया, शेर आया, शेर आया। ऐसा बोला एक बार वाणी में माना तीन बार बोला ना। माना कब-कब?

बाबाः हां, हां, तो प्रत्यक्षता तीन बार करते हैं। चौथी बार में तो हो ही जाता ह। चार बार शूटिंग होती ह। सर्प भी ३-४ बार खल त्याग करता ह। तो ऐसे ही यहाँ भी ह। पहली बार चिल्लाया- भगवान आया, भगवान आया। दूसरी बार चिल्लाया- भगवान आया। तीसरी बार चिल्लाया – भगवान आया। भगवान आया ही नहीं। आखरीन आना तो हकि नहीं आना ह?

जिज्ञासुः आना ह।

बाबाः जब आना हतब कोई नहीं चिल्लाता। जब विनाश होना होगा; विनाश कब होगा? जब सब विनाश की बातों से निश्चिंत हो जावेंगे तब ही विनाश हो जावेगा।

Time: 08.18-09.25
Student: Baba, it was said, "A lion came, a lion came, a lion came". It was said like this in a *vani*. I mean, it was repeated thrice, wasn't it? Which three occasions does it refer to?
Baba: Yes, yes; revelation takes place thrice. On the fourth occasion the revelation takes place for sure. The shooting takes place four times. A snake also sheds its skin 3-4 times. So, similar is the case here too. Shouts were raised for the first time: "God came, God came". Shouts were raised the second time: "God came". Shouts were raised the third time: "God came". God did not come at all. Ultimately, does He have to come or not?
Student: He has to come.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: When He (actually) has to come, nobody shouts. When destruction is to take place; when will the destruction take place? When everyone becomes carefree regarding the subject of destruction, destruction will take place at that very moment.

समयः 10.35-12.42

जिज्ञासुः बाबा, कुछ भी पूछने की दरकार नहीं। बाप तो खुद ही बोलता ह॥ अभी बोला ना, कुछ भी पूछने की दरकार नहीं।

बाबाः बाप खुद ही सब कुछ बताते हैं।

जिज्ञासुः सब कुछ बताते हैं। मतलब मुरली का डेट बोलकर समझाते हैं या... जो पहले सुनाई गई वो कागज़ की मुरली या सीडी से समझाते? उसके नंबर बोलके समझाया जाता ह॥या यूं ही बोलते जाते हैं?

बाबाः बाबा कोई कागज़ की मुरली या ग्रंथ पढ़करके समझाते हैं क्या?

जिज्ञासुः वह॥ी बात नहीं। पहले तो बोल चुके ह॥न ब्रह्मा के मुख से जो....

बाबाः ब्रह्मा के मुख से बोलते थे, वहाँ भी मुख से ही बोलते थे। बोलने वाला अलग था, जो बोलता था। लिखने वाले अलग थे। अभी भी पढ़ने वाला अलग ह॥आत्मा। लिखने वाले अलग हैं और जो क्लेरिफिकेशन देने वाला ह॥वो अलग ह॥

Time: 10.35-12.42
Student: Baba, ("There is no need to ask anything. The Father tells you [everything] on his own". Just now it was said that there is no need to ask anything.
Baba: The Father narrates everything on his own.
Student: He narrates everything. Meaning, does He narrate after mentioning the murli date or…He explains on the printed murlis or CDs. Does He explain after telling its number or does He simple speak?
Baba: Does Baba explain after reading the printed *murli* or books?
Student: It is not like this. He has already narrated it through the mouth of Brahms earlier, hasn't He? Those…
Baba: He used to speak through the mouth of Brahma; even there He used to speak through the mouth itself. The speaker, the one who spoke was different [and] the ones who wrote it were different. Even now the soul that reads is different. Those who write down are different and the one who gives the clarification is different.

जिज्ञासुः उस समय ब्रह्मा बाबा नहीं लिखते थे क्या?

बाबाः लिखते क्यों नहीं थे? ५-७ पेज बठ करके लिखते थे। कराची से मुरली निकलती चली आई ह॥ पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे। ५-७ पेज बठ लिखते थे। बाप लिखाते थे। ये तो मुरली में आया ह॥

जिज्ञासुः सुबह-सुबह दो बजे उठकरके लिखते थे ऐसा भी कहा ह॥

बाबाः हाँ।

जिज्ञासुः फिर वही मुरली सुबह मम्मा बठ करके पढ़ती थी।

बाबाः उसकी कापियाँ निकलती थी।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

दूसरा जिज्ञासुः बाबा, बाप लिखाते थे तो बाप तो कराची में थे। तो माताओं में प्रवेश करके लिखाते थे?

बाबाः कोई जरूरी ह कि पुरुषों में ही प्रवेश किया जाएगा? पता नहीं चलता था। जिसमें प्रवेश करके लिखाते थे उनको पता नहीं चलता था। ब्रह्मा बाबा बठ लिखते थे। कोई अपवित्र आत्मा में प्रवेश करके बाप लिखाते थे।

Student: Didn't Brahma Baba write at that time?
Baba: Did he not used to write? He used to sit and write 5-7 pages. *Murli* has been narrated from Karachi. Earlier Baba did not narrate the *murlis*. He used to sit and write 5-7 pages. The Father used to dictate. It has been mentioned in the *murli*.
Student: It has also been said: "[Baba] used to wake up at 2 AM early in the morning and write".
Baba: Yes.
Student: Then Mamma used to sit and read the same *murli* (in the class) in the morning.
Baba: Its copies used to be prepared.
Second student: Baba, "The Father used to dictate". [But] the Father was not present in Karachi. So, did he enter the mothers and dictate?
Baba: Is it necessary that He has to enter only in men? They did not used to know. The one in whom He entered and dictated did not used to know. Brahma Baba used to sit and write. So, the Father used to enter in (the body of) some impure soul and dictate it.

समयः 14.22-16.55

जिज्ञासुः बाबा, ईजिप्ट में विशाल बड़े-बड़े पिरामिड बनाए गये।

बाबाः पिरामिड। हाँ, जी। सात दुनिया के बड़े-2 वंडर्स हैं। उनमें मिस्र के पिरामिड भी हैं। जसे हिन्दुस्तान का ताजमहल ह। चीन की बड़ी दीवाल ह। ऐसे मनुष्यों के बनाए हुए सात प्रकार के बड़े-बड़े वंडर्स हैं। जो वंडर्स देखने के लिए लोग जाते हैं पसे खर्च करके। हाँ तो?

जिज्ञासुः पांचवीं शताब्दी में बनाए गए थे।

बाबाः ठीक ह बनाए गए होंगे। कोई बड़ी बात नहीं। हाँ।

जिज्ञासुः उस समय तो...

Time: 14.22-16.55
Student: Baba, huge pyramids were built in Egypt.
Baba: Pyramid. Yes. There are seven big wonders of the world. The pyramids of Egypt are also one of them. For example, the Taj Mahal of India, the Great Wall of China. They are the big wonders of seven kinds built by human beings. People spend money and go to see those wonders. Yes, so?
Student: They were built in the fifth century.
Baba: OK. They must have been built. It is not a big thing. Yes.
Student: At that time....

बाबाः जसे ये हद के वंडर्स बनाए गए हैं एक के बाद एक। आज से 300-500 साल पहले शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया। ये तो कलियुग के मध्यांत में आकरके बना। ऐसे ही द्वापरयुग के आदि से ही ये मनुष्यों के द्वारा बनाए जाते रहे। ये तो हद की बात हो गई। लेकिन बेहद

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ब्राह्मणों की दुनिया में भी मनुष्य गुरुओं ने कमाल करके दिखाई ह ईश्वरीय सेवा के मामले में। कोई ने राजयोग शिविर निकाला। ढ़ेर की ढ़ेर (पब्लिक) प्रदर्शनी जाती ह देखने के लिए। कोई ने कान्फ्रेन्स निकाली। कोई ने प्रदर्शनी निकाली। कोई ने प्रोजेक्टर शो निकाला। एक के बाद एक करिश्मे निकालते चले गए। अभी लास्ट में क्या निकाला? मेगा प्रोग्राम। लेकिन बड़े ते बड़ा वंडर कौन तय्यार करता ह (किसी ने कहा – शिवबाबा।) शिवबाबा आकरके बड़े ते बड़ा वंडर तय्यार करते हैं हेविन। जिसको देख करके सारी दुनिया चमत्कृत हो जावेगी। और वो हेविन भारत में ही तय्यार होता ह

Baba: Just as these limited wonders were built one after the other. Shahjahan built the Taj mahal 300-500 years ago. This was built in the end of the middle period of the Iron Age. Similarly, from the beginning of the Copper Age itself, these [wonders] were built by human beings. This was about the limited wonders. But also in the unlimited world of brahmins, the human gurus have worked wonders in the case of godly service. Someone invented the *Raja yoga shivir* (*Raja yoga* camp). [The public] goes to see the exhibitions in a large numbers. Someone invented the conference. Someone invented the exhibition. Someone invented the projector show. They went on inventing wonders one after the other. Now, what did they invent at last? Mega programs. But who prepares the biggest wonder? (Someone said: Shivbaba.) Shivbaba comes and prepares the biggest wonder, [i.e.] heaven. The entire world will be mesmerized on seeing that wonder. And that heaven is established only in India.

समयः16.58-18.35

जिज्ञासुः बाबा, हरेक को अपना लक्ष्य लक्ष्मी और नारायण बनने का रखना ह फिर लक्ष्मी-नारायण के चित्र के ऊपर पर्दा डालके...

बाबाः लक्ष्मी-नारायण के चित्र के ऊपर?

जिज्ञासुः जो आपके पीछे ह – चित्र के ऊपर पर्दा डाल के डेकोरेशन किया। अपने लक्ष्य को ही छुपा देते हैं।

दूसरा जिज्ञासुः लक्ष्य को छुपा दिया पर्दा डाल के लक्ष्मी-नारायण के चित्र को डेकोरेशन करके।

बाबाः हाँ। अभी पर्दा उठने वाला ह इसलिए पर्दा डाल दिया ह

जिज्ञासुः ये क्रिश्चियन संस्कार ह ना बाबा पॉम्प एंड शो करना।

बाबाः क्रिश्चियन लोग दिखावा करते हैं। यहाँ तो पर्दा डाल दिया और।

जिज्ञासुः माना भगवान ने इतना सुंदर सजाया उन दोनों को। दोनों को आगे रखा हम भी ऐसा बन सकते हैं।

बाबाः हाँ, बन जाओ। बहुत लंबा टाइम हो गया ना कि बनना चाहिए, बनना चाहिए। अभी तक कोई बना ही नहीं, इसलिए पर्दा डाल दिया।

Time: 16.58-18.35
Student: Baba, everyone has to set for himself a goal of becoming Lakshmi and Narayan. But by putting a curtain over the picture of Lakshmi and Narayan....
Baba: On the picture of Lakshmi and Narayan?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: For example, the one behind you – they have put a curtain on it and have decorated it. They have hidden their very goal.
Second Student: They have put a curtain on the picture of Lakshmi -Narayan and have hidden the goal by decorating it.
Baba: Yes. Now the curtain is going to be raised. This is why the curtain has been pulled down.
Student: These are Christian *sanskars* of doing pomp and show, aren't they?
Baba: The Christians show-off. Here, they have put a curtain on it.
Student: I mean to say, God decorated both of them so beautifully. He kept both of them ahead [so that] we can also become like this.
Baba: Yes, become that. It has been a long time saying: we should become, we should become. [But] nobody became that so far. This is why curtains were pulled down on it.

जिज्ञासुः माना बाबा को भी नारायण के रूप में नहीं देखे?

बाबाः बाबा नारायण ह नारायण में और बाबा में तो बहुत फर्क ह नारायण तो १६ कला संपूर्ण, सर्व गुण संपन्न, संपूर्ण अहिंसक, मर्यादा पुरुषोत्तम होते हैं। और बाबा के गुण तो बिल्कुल अलग ह बाबा सर्व गुण संपन्न बन के रहे? बाबा तो कहते हैं मैं कोई सा-संत महात्मा भी नहीं हूँ।

Student: Does it mean, we should not see even Baba in the form of Narayan?
Baba: Is Baba Narayan? There is a lot of difference between Narayan and Baba. Narayan is complete with 16 celestial degrees, complete will all the virtues, he is completely non-violent and *maryada purushottam* (highest among all souls in following the code of conduct) and Baba's virtues are completely different. Should Baba become complete with all the virtues? Baba says: "I am not even a sage, a saint or a noble soul.

समयः 18.40-19.40

जिज्ञासुः सिक्ख र्म जो हवो ६-८ साल पहले ही स्थापित हुआ ना।

बाबाः ६-८ साल के पहले?

जिज्ञासुः ६००-८०० साल के पहले।

बाबाः ५०० - ६०० साल पहले। महात्मा...

जिज्ञासुः तो सिक्ख र्म की आत्माएं परमाम से कब उतरती हैं?

बाबाः परमाम से ५०० साल पहले ही आए।

जिज्ञासुः तो उन लोगों का कम जन्म हो गया ना।

बाबाः कम जन्म तो होते ही हैं। उनके ८४ जन्म होते हैं?

जिज्ञासुः तो विर्मी जो हैं इस्लाम या क्रिश्चियन र्म। उन लोगों के ज्यादा जन्म और स्वर्मी आत्माएं जो हैं सिक्ख र्म के उनको कम जन्म क्यों?

बाबाः लेकिन उनमें भी दो तरह के हैं ना। एक हैं कनवर्ट होने वाले और एक हैं अपने र्म के पक्के। हर र्म में दो प्रकार के हैं। तो सिक्ख र्म में भी दो प्रकार के हैं। एक तो वो हैं जो ८४ जन्म लेते चले आए। वो बीज रूप आत्माएं हैं। सिक्ख र्म की भी बीज रूप आत्माएं हैं जो ८४ जन्म लेती हैं।

Time: 18.40-19.40

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: The Sikh religion was established 6-8 years ago, wasn't it?
Baba: 6-8 years ago?
Student: 600-800 years ago.
Baba: 500 - 600 years ago. Mahatma.....
Student: So, when do souls of the Sikh religion descend from the Supreme Abode?
Baba: They came from the Supreme Abode just 500 years ago.
Student: So, they had fewer births, didn't they?
Baba: They do have fewer births. Do they take 84 births?
Student: So, I mean, the *vidharmis*, i.e. those of the Islam and Christian religion, why do those souls have more births and the *swadharmi* souls belonging to the Sikh religion have fewer births?
Baba: But there are two kinds [of souls] even among them, aren't there? One is those who convert and the other is those who are steadfast in their religion. There are two kinds [of souls] in every religion. So, there are two kinds [of souls] in the Sikh religion also. One is those who have been taking 84 births. They are the seed form souls. There are the seed form souls of the Sikh religion too, who have 84 births.

समय: 19.40-20.50

जिज्ञासु: बाबा, 108 शिवबाबा का टाईटल है ना बाबा, तो मनुष्य गुरुओं का टाईटल....

बाबा: मनुष्य गुरुओं ने तो टाईटल रखवाय लिया है। जैसे उन्होंने अपने ऊपर टाईटल रख लिया है। शिवोहम, ब्रह्मास्मी, मैं ही ब्रह्मा हूँ, मैं ही शिव हूँ। वो तो झूठा टाईटल है।

जिज्ञासु: 108 रखते हैं ना?

बाबा: 108 की माला वो कोई बनाते थोड़े ही है संगठन। यहाँ तो शिवबाबा आकरके प्रैक्टिकल में 108 दुनिया से चुनिन्दा, चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं का संगठन बनाके तैयार करके दिखाते हैं: देखो, ये दुनिया की सबसे पावरफुल आत्मायें हैं। इनसे कोई भी टक्कर नहीं ले सकता।

जिज्ञासु ने कुछ कहा।

बाबा: हाँ। वो सिर्फ झूठा प्रोपोगेंडा करते हैं गुरु लोग। और यहाँ बाबा प्रोपोगेंडा नहीं करता प्रैक्टिकल काम करके दिखाता है।

Time: 19.40-20.50
Student: The title of 108 is of Shivbaba, isn't it? So, the title of the human gurus….
Baba: The human gurus have given themselves that title. For example, they have given themselves the title, *Shivoham*, *Brahmasmi* [on themselves], [they say:] I myself am Brahma, I myself am Shiva. That is a false title.
Student: They give themselves [the title of] 108, don't they?
Baba: They do not form the gathering, the rosary of 108. Here Shivbaba comes and makes the gathering of 108 chosen elevated souls from the world in practical: "Look, these are the most powerful souls of the world. Nobody can clash with them".
Student said something.
Baba: Yes. Those gurus just make a false propaganda. And here Baba doesn't make propaganda; He does the work in practical.

समय: 22.12-23.50

जिज्ञासु: बाबा, हर धर्म में अच्छे-बुरे हैं, फिर क्यों विधर्मियों की विकारों से तुलना की जाता है?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः जो और-और वि□र्मी हैं उनमें अच्छे पहुँचे कहाँ से? देवी-देवता सनातन □र्म से जन्म लेते-लेते पहुँचे या पहले से ही अच्छे थे? बताओ।

जिज्ञासुः पहले देवी-देवता □र्म में के तो अच्छे थे।

बाबाः अच्छे थे। फिर वो जन्म लेते-लेते जब वहाँ पहुँचे तब उन □र्मों का फाउंडेशन पड़ा। हमेशा वो अच्छे नहीं थे।

जिज्ञासुः अभी भी हम देखें तो...।

बाबाः हर □र्म में अच्छे हैं? १६ कला सम्पूर्ण हैं कोई में?

जिज्ञासुः ऐसे नहीं होता बाबा। उनकी वृत्ति में खोट नहीं ह□

बाबाः खोट नहीं ह□ उनके मुखिया में? उनका जो मुखिया ह□– समझो क्राइस्ट ह□या मोहम्मद ह□ या महात्मा बुद्ध ह□उसमें खोट ह□या नहीं ह□ अरे। जब मुखिया में ही खोट ह□तो बीच वालों में और अंत वालों में तो जरूर होगी।

Time: 22.12-23.50

Student: Baba, there are good and bad people in every religion. Then why are the *vidharmis* compared with vices?

Baba: From where did the good ones reach the other *vidharmis*? Did they reach there from the Ancient Deity religion while being born again and again or were they good from the beginning itself? Tell me.

Student: Initially, the good ones were only in the Deity religion.

Baba: There were good ones (in the Deity religion). Then, when they reached there while being born again and again, then the foundation of those religions was laid. They were not good always.

Student: If we observe even now…..

Baba: Are there good ones in every religion? Is there anyone who is complete with 16 celestial degrees in any one of them?

Student: It is not so Baba. There is no defect in their vibrations.

Baba: There is no defect? What about their head (chief)? Their head; suppose it is Christ, Mohammad or Mahatma Buddha; is there any defect in them or not? Arey? When there is defect in their head itself, then there will certainly be a defect in those of the middle [period] and those of the end.

समयः 25.02-26.55

जिज्ञासुः बाबा, जो लोग कारणे-अकारणे दो महीने तक क्लास में नहीं आए, पाठशाला या मिनीम□बन में नहीं आये, तो दुबारा भट्ठी करने के लिए बोला।

बाबाः नहीं। बाबा ने ऐसा बोला – कोई बच्चों की दो महीने चिट्ठी नहीं आती ह□तो बाबा समझते हैं मर गया। लेकिन कोई गीता पाठशाला में जाते रहते हैं, क्लास करते हैं संगठन क्लासेज होते हैं महीने-महीने या सप्ताह-सप्ताह वो संगठन क्लास में कहीं जाते रहते हैं तो कोई न कोई प्रूफ तो मिल जाता ह□ तो उनको मरा हुआ थोड़े ही कहेंगे। अगर साल दो साल भी कोई प्रूफ नहीं मिलता ह□तो कहेंगे मर गया। मर गया तो दुबारा जन्म लिया। दुबारा जन्म लिया तो फिर दुबारा भट्ठी करे।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा, उन लोगों को दुबारा भट्ठी करना ह तो नज़दीकी मिनीम ुबन में कर सकते हैं ना।

बाबाः भट्ठी तो जहां से पहले की थी वहीं करें जाके।

Time: 25.02-26.55
Student: Baba, if someone was not able to come to the class, to the *gita pathshala* or *minimadhuban* for two months due to some or the other reason; they have been asked to do *bhatti* once again.
Baba: No. Baba has said, "If letters are not received from children for two months, then Baba thinks that he has died. But if someone keeps visiting the *gitapathshala*, keeps attending the classes, the *sangathan* classes which are organized on monthly or weekly basis; if they keep attending the *sangathan* classes somewhere, then some or the other proof is available. So, they will not be said to be dead. If a proof is not found for a year or two, then it will be said that he has died. If he dies, he has to be born again. If he is born again (i.e. develops faith), then he should undergo the *bhatti* once again.
Student: If they have to undergo *bhatti* again, they can do it at a nearby *minimadhuban*, can't they?
Baba: They should undergo *bhatti* at the very place where they underwent it earlier.

जिज्ञासुः नहीं, कुछ लोग गरीब होते हैं ना। बां ेली माताएं होती हैं तो फिर दुबारा वहाँ तक जाना.....

बाबाः तो बां ेली हैं तो ज से सन ४७ तक यज्ञ के आदि में इंतज़ार किया था व से इंतज़ार करें। बां ेला बनाया किसने? ऊपरवाले ने बना दिया? अपने-अपने कर्मों के आ ार पर ही बां ेले बने तो खुशी-खुशी काटो बं न को। टाइम आएगा तो छूटेले हो जाएंगे। और हो सकता ह छूटेले हो जाने के बाद पुरानों-पुरानों से तीखे चले जाएं।

Student: No, some people are poor, aren't they? There are mothers in bondages; so, to go there (Kampil) once again...
Baba: If they are *baandheli* (mothers in bondages), then just as they had waited till 1947 in the beginning of the *yagya*, they should wait now. Who made them *bandhela*? Did the one above (God) make them this? They have become *bandhele* on the basis of their individual actions itself. So, they should clear it happily. When the time comes, they will become free. And it is possible that after becoming free, they may gallop faster than the old ones.

समयः 26.58-28.28
जिज्ञासुः बाबा, विदेशियों ने जो व्यवस्था बनाई हुई ह उसका सुख तो हम ले रहे हैं ना बाबा।
बाबाः विदेशियों ने क्या व्यवस्था बनाई हुई हैं?
जिज्ञासुः ये जो भी इलेक्ट्रिसिटी ह .
बाबाः इलेक्ट्रिसिटी ह ये कितने टाइम का पॉम्प एण्ड शो ह ये १०० साल का पॉम्प एण्ड शो। इसी में खुश हो गए?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः नहीं बाबा। अभी तो वर्तमान में तो उसका लाभ तो मिल रहा ह।

बाबाः लाभ ज्यादा आप ले रहे हैं?

Time: 26.58-28.28
Student: Baba, we are enjoying the pleasures of the systems that have been developed by the foreigners, aren't we?
Baba: Which systems have the foreigners developed?
Student: The electricity etc…..
Baba: The electricity. This is a pomp and show for how long? This is a pomp and show of 100 years. Have you become happy in just this?
Student: We are reaping its benefits at present, aren't we?
Baba: Are you enjoying more benefits?

जिज्ञासुः हो रहा ह ना बाबा।

बाबाः लेकिन दुःखी लोग कितने ह जिनके पास अभी भी पहुँची ही नहीं ह ये तो बड़े-बड़े जहाँ महानगर हैं वहाँ उसकी मुहय्या मिल रही ह। वो भी पूरी नहीं मिलती। हिन्दुस्तान में फाफा बहुत मार रहे हैं – इतने गांव में बिजली पहुँच जाएगी, इतने गांव में पीने योग्य पानी का इंतज़ाम हो जाएगा। लेकिन ह कितना? परसेन्टेज तो बहुत कम ह। गरीब तो और ही गरीब होते जा रहे हैं।

जिज्ञासुः वो देखें तो बहिष्कार भी नहीं कर रहे ना ।

बाबाः नहीं। बहिष्कार करने की क्या दरकार ह बहिष्कार तो खुद ही हो जावेगा। जब अति होगी तो अति का अंत हो जावेगा।

दूसरा जिज्ञासुः बाबा अभी जो साइंस के सा न निकले हैं ये भी बाप के प्रत्यक्षता में सहयोगी हैं?

बाबाः बाप की प्रत्यक्षता में सहयोगी भी बनते हैं। हाँ।

Student: We are reaping benefits, aren't we Baba?
Baba: But for how many sorrowful people is it not yet accessible? It is available in the big metropolitan cities. Even there it is not fully available. Big claims are being made in *Hindustan* (India): "Electricity will reach these many villages; arrangements will be made for potable water in these many villages". But how far has it reached? The percentage is very less. The poor are becoming poorer.
Student: In a way, if we see, we are not even boycotting it, are we Baba?
Baba: No, what is the need to boycott it? Boycott will take place automatically. When it reaches the extreme level, then extremity will end.
Second student: Baba, are the scientific inventions (means) which have emerged now helpful in the revelation of the Father?
Baba: They also become helpful in the Father's revelation. Yes.

समयः 29.32-30.40

जिज्ञासुः बाबा, यूनानी देवता एटलस के कन्धों पर पृथ्वी का गोला दिखाया गया ह।

बाबाः कहाँ-कहाँ दौड़े-दौड़े फिर रहे हो?

जिज्ञासुः यूनानी देवता एटलस के कंधे पर पृथ्वी का ग्लोब दिखाया ह।

बाबाः तो क्या हुआ?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः उसको उठाने वाला.....

बाबाः ये तो भारत में नहीं दिखाया है दशावतार में? दशावतार में कोई अवतार है ऐसा?

दूसरा जिज्ञासुः वराहावतार।

बाबाः फिर? भारत को ही सबने फालो किया है। चाहे जैन धर्म है, चाहे क्रिश्चियन धर्म है, चाहे मुसलमान है। नाम और रूप दूसरे-दूसरे दे दिये हैं फरिश्ताओं के लेकिन काम सब वो ही हैं।

Time: 29.32-30.40
Student: Baba, a globe has been depicted on the shoulder of the Greek deity Atlas.
Baba: Where all are you wandering?
Student: A globe of the Earth has been depicted on the shoulders of the Greek deity Atlas.
Baba: So what?
Student: The one who lifts it…?
Baba: Has this not been shown in [one of] the ten incarnations (*dashaavataar*) in India? Is there any incarnation like this among the ten incarnations?
Another Student: *Varahavatar*[6].
Baba: Then? Everyone has followed India itself. Whether it is Jainism or Christianity or Muslim religion, they have given different names and forms to angels, but all the tasks (related to them) are the same.

समयः 29.32-30.07

जिज्ञासुः अण्डा पहले (या) मुर्गी पहले.....?

बाबाः सृष्टि अनादि है। सृष्टि का आदि और अंत नहीं होता है। न इसका आदि है न अंत है। इसलिए ये प्रश्न ही बेवकूफी है कि मुर्गी पहले है कि अंडा पहले है। सृष्टि अनादि है तो फिर मुर्गी भी अनादि है और अंडा भी अनादि है।

Time: 29.32-30.07
Student: Did egg emerge first or did hen emerge first?
Baba: The world is eternal (*anaadi*). There is no beginning and end of the world. There is neither beginning nor end of it. Therefore, asking this question is itself foolishness that whether the hen comes first or the egg. If the world is eternal, the hen is also eternal and the egg is also eternal.

समयः 30.08-30.40

जिज्ञासुः पब्लिक बोलते हैं मानव शरीर बंदर से बना है।

बाबाः पब्लिक नहीं बोल रही है। डारविन्स थ्योरी में निकाला। डारविन ने ये थ्योरी निकाली कि मनुष्य पहले बंदर था। बाद में वैज्ञानिकों ने वो थ्योरी को झूठा साबित कर दिया कि बंदर नहीं था।

जिज्ञासुः संसकार।

बाबाः हाँ जी, बंदरों जैसे संस्कार थे मनुष्य में और वो आज भी हैं।

[6] The third or boar incarnation of Vishnu

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 30.08-30.40
Student: Public says that the human body has evolved from monkeys.
Baba: Public is not saying so. It was said in Darwin's theory. Darwin invented the theory that human being was initially a monkey. Later on the scientists proved that theory wrong, that he was not a monkey.
Student: The *sanskars*.
Baba: Yes, human beings had *sanskars* like that of a monkey. And they have it even today.

समयः 30.50-32.10

जिज्ञासुः बाबा, भाई पूछ रहे हैं सतयुग में भी कंट्रोल करने का डिपार्टमेंट होता ह क्या?

बाबाः काहे का डिपार्टमेंट?

जिज्ञासुः कंट्रोल करने का ।

दूसरा जिज्ञासुः पोलिस डिपार्टमेंट।

बाबाः क्या कंट्रोल करने के?

जिज्ञासु ने कुछ कहा।

बाबाः कंट्रोल वहाँ किया जाता ह जहाँ अनुशासनहीनता होती ह। क्या? जहाँ अनुशासनहीनता ही नहीं ह वहाँ न कंट्रोलर होता ह न कंट्रोल करने की दरकार होती ह। सब कुछ प्रकृति अपने आप मुहय्या करती ह। प्रकृति का कंट्रोल चलता ह सारा। आटोमेटिक सारा कार्य चलता ह। इसलिए झाड़ के चित्र में अथवा सीढ़ी के चित्र में लक्ष्मी-नारायण को कोई छत्र नहीं दिखाया ह। उनको कोई राज सिंहासन नहीं दिखाया हुआ ह कि जिसके ऊपर बठे हुए हों। वहाँ कोई सिंहासन पर बठ के कोई कंट्रोल करने की दरकार नहीं पड़ती क्योंकि हर आत्मा स्वयं ही कंट्रोल्ड ह। हर आत्मा का आत्मा के ऊपर शासन ह। दो कलाएं जब कम हो जाती हैं तो शासन की शुरूआत होती ह रामराज्य में। रामराज्य में छत्रछाया दिखाई गई ह सिंहासन दिखाया गया ह।

Time: 30.50-32.10
Student: Baba, the brother is asking whether there is any department to control others even in the Golden Age.
Baba: Which department?
Student: To control.
Second student: Police department.
Baba: To control what?
Student said something.
Baba: Controlling is done where there is indiscipline (*anushaasanheentaa*). What? Where there is no indiscipline at all, there is neither controller, nor any need to control. Nature makes everything available on its own. Everything is controlled by the nature. Everything takes place automatically. This is why Lakshmi and Narayan have not been shown with any canopy (*chhatra*) in the picture of the Tree or the Ladder. They have not been shown to be sitting on a royal throne either. There is no need to control anyone by sitting on a throne there because every soul is self controlled. Every soul rules itself. When two celestial degrees decrease, then governance begins in the kingdom of Ram. Canopy has been shown; throne has been shown in the kingdom of Ram.

समयः 32.11-35.16

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः बाबा, एक ... मुरली में बोला ह□सभी को पहले सूक्ष्म वतन में जाना ह□फिर शान्ति□ाम में जाना ह□

बाबाः ठीक ह□

जिज्ञासुः ये स्थूल सूक्ष्म वतन की बात तो नहीं ह□

बाबाः स्थूल की बात?

जिज्ञासुः नहीं। सूक्ष्मवतन तो कोई ह□ही नहीं।

बाबाः सूक्ष्मवतन नहीं ह□लेकिन ये ढ़ेर के ढ़ेर जब एटम बम्ब फटेंगे, पृथ्वी के ऊपर भूकम्प आयेंगे, अर्थक्वेक होंगे, बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें गिरेंगी, अचानक लोगों की मौतें होंगी तो ये आत्माएं कहाँ रहेंगी? शरीर तो उनको मिलेगा नहीं। शान्ति□ाम में नहीं जाएंगी सी□ी। जो अकाले मौत में हाय-हाय करके शरीर छोड़ने वाले हैं वो शान्ति□ाम जायेंगे? वो लटक जायेंगे थोड़े समय के लिए। कहाँ लटकेंगे?

जिज्ञासुः सूक्ष्मवतन।

Time: 32.11-35.16

Student: Baba, it has been said in another Murli that everyone has to first go to the subtle world and then to the soul world.
Baba: It is correct.
Student: Is this subtle world in a physical sense?
Baba: In the physical sense?
Student: It isn't present. Subtle world does not exist at all.
Baba: The subtle world does not exist, but when many atom bombs explode, when earthquakes occur on the earth, when big buildings crash, when people die an untimely death, where will these souls stay? They will certainly not get bodies. They will not go to the abode of peace directly. Will those who die an untimely death after much suffering go to the supreme abode? They will hang (in the subtle world) for some time. Where will they hang?
Student: The subtle world.

बाबाः सूक्ष्म स्टेज उनकी बन जाएगी। साकार दुनिया में उनको जन्म नहीं मिलेगा। हाँ दूसरों में प्रवेश करके पार्ट बजाते रहेंगे। ढ़ेर के ढ़ेर निकलेंगे। करोड़ों की तादाद में निकलेंगे। इसलिए बताया – एक-एक में (किसी ने कहा – १४-१४) अनेकों-अनेकों आत्माएं प्रवेश करके पार्ट बजाएंगी। इसलिए आत्मिक स्थिति □ारण करना बहुत जरूरी ह□ थोड़ी भी देहभान की स्थिति हुई और कोई न कोई वि□र्मी आत्मा प्रवेश कर जाएगी। प्रवेश करके फिर तंग दुखी करती रहेंगी।

जिज्ञासुः बाबा, एक ही शरीर में अनेकों-अनेकों आत्माएं प्रवेश करेंगी, पार्ट बजाएंगी, तो फिर ब्रॉड ड्रामा में उनका जो रूप होगा वो एक जैसा रहेगा या अलग-अलग रहेगा?

बाबाः ब्रॉड ड्रामा में तो अनेक जन्म हैं ना। यहाँ तो एक ही जन्म में सब कुछ दिखना ह□ चलना ह□ ब्रॉड ड्रामा में तो ६३ जनम हैं वहां। ३३ करोड़ देवताओं में से एक-एक में सोल का प्रवेश होता रहता ह□ जो दूसरे-दूसरे □र्म की आत्माएं हैं परम□ाम से उतरती हैं वो उतरते ही तुरंत

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

गर्भ से जन्म तो लेती नहीं। तो किसमें प्रवेश करेंगी? इन्हीं ३३ करोड़ देवताओं में प्रवेश करती हैं। ये ३३ करोड़ देवताएं ही सबसे जस्ति तमोप्र□ान बनती हैं, टाइम टू टाइम। तो ३३ करोड़ और ५००-७०० करोड़ का अनुपात निकाल लो।

किसी ने कहा – सिक्सटीन-एइटीन (१६-१८)।

बाबाः हाँ, जी।

Baba: They will achieve a subtle stage. They will not be born in the corporeal world. Yes, they will continue to enter in others and play their part. They will emerge in large numbers. They will emerge in crores (millions). This is why it was said, 'in each person (Someone said 14 each) numerous souls will enter and play their part'. This is why it is very important to inculcate the soul conscious stage. If the stage of body consciousness emerges even a little, one or the other *vidharmi* soul will enter. They will continue to disturb and bring sorrow by entering.

Student: Baba, many souls will enter in the same body and play their part; then will their form in the broad drama be alike or different?

Baba: There are many births in the broad drama, aren't there? Here everything is to be seen, [everything has to] happen in the same birth. There are 63 births there in the broad drama. Entry of souls takes place in each one of the 33 crore(330 million) souls. The souls of other religions which descend from the supreme abode are not born through the womb immediately. So, in whom will they enter? They enter in these 33 crore deities only. It is these 33 crore deities who become most *tamopradhan* from time to time. So, calculate the ratio between 33 crores and 500-700 crores.

Someone said – Sixteen-eighteen.

Baba: Yes.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info